Not to be filled by the Candidate
(अभ्यर्थी द्वारा नहीं भरा जाये)

Total Pages - 24

Time : 2 Hours
समय : दो घंटे

Maximum Marks : 50
पूर्णांक : 50

महत्वपूर्ण निर्देश / IMPORTANT INSTRUCTIONS

1. अपेक्षित विवरण केवल 'प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका' के ऊपर दिये गये फ्लैप पर ही लिखें, अन्य किसी स्थान पर नहीं।
2. 'प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका' (रफ कार्य के पृष्ठ सहित) के अन्दर कहीं पर भी कोई पहचान चिन्ह यथा, रोल नम्बर, नाम, पता, मोबाईल नम्बर / टेलीफोन नम्बर, देवताओं के नाम अथवा किसी भी प्रश्न के उत्तर से असंबंधित शब्द, वाक्य एवं अंक लिखे जाने या अंकित किये जाने को अनुचित साधनों का उपयोग माना जायेगा। ऐसा पाये जाने पर अभ्यर्थी की सम्पूर्ण परीक्षा में अभ्यर्थिता रद्द कर दी जायेगी।
3. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा केन्द्र पर व्यवधान उत्पन्न करता है या वीक्षण स्टाफ के साथ दुर्व्यवहार करता है अथवा छलनापूर्ण कार्य करता है तो वह स्वयं की अयोग्यता के लिए उत्तरदायी होगा। वह राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 1992 के तहत दाण्डिक कार्यवाही हेतु भी उत्तरदायी माना जायेगा।
4. प्रश्नों की संख्या और उनके अंक 'प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका' में अंकित किये गये हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर 'प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका' में प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान पर ही लिखें कहीं और नहीं, अन्यथा ऐसे उत्तर का मूल्यांकन परीक्षक द्वारा नहीं किया जायेगा।
6. अभ्यर्थी अपने उत्तर निर्धारित जगह से अधिक में नहीं लिखें। किसी भी परिस्थिति में पूरक उत्तर पुस्तिका नहीं दी जायेगी।
7. प्रश्न द्वारा अपेक्षित भाषा, अंग्रेजी या हिन्दी में ही उत्तर दीजिये।
8. यदि 'प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका' कहीं से कटी–फटी या अमुद्रित है तो अविलम्ब वीक्षक के ध्यान में लाकर उसे बदलवा लें अन्यथा उसका दायित्व अभ्यर्थी का होगा।
9. परीक्षा कक्ष में किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र के साथ प्रवेश करना सर्वथा वर्जित है।

.....

1. Write the required particulars only on the flap provided on the top of "Question Paper-cum-Answer Book"; and not at any other place.
2. Do not write any mark of identity inside the "Question Paper-cum-Answer Book" (including paper for rough work) i.e. Roll No., Name, Address, Mobile No./Telephone No., Name of God etc. or any irrelevant word other than the answer of question. Such act will be treated as unfair means. In such a case the candidature of the candidate shall be rejected for the entire examination.
3. If a candidate is found creating disturbance at the examination centre or misbehaving with Invigilating Staff or cheating will render him liable for disqualification. He shall also be liable for penal action under The Rajasthan Public Examination (Prevention of Unfair Means) Act, 1992.
4. The number of questions to be attempted and their marks are indicated in the "Question Paper-cum-Answer Book".
5. The answers of the questions should strictly be written in the space provided below question and not elsewhere, otherwise, such answer shall not be assessed by the examiner.
6. Candidates do not write the answers beyond the space prescribed. No Supplementary Answer Book shall be provided in any case.
7. Attempt answer only in the language, English or Hindi, as required by the question.
8. In case the "Question Paper-cum-Answer Book" is torn or not printed properly, bring it to the notice of Invigilator for change, at earliest otherwise the candidates will be liable for that.
9. Possession of any electronic device is strictly prohibited in the Examination Hall.

Note:-Attempt all the 05 questions. Each question carries 10 marks.

नोटः—समस्त 05 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु 10 अंक निर्धारित हैं।

Question No. 1: **(10 Marks)**

Translate the following passage in Hindi.

नीचे दिये गए लेखांश का हिन्दी में अनुवाद कीजियेः—

"This Smriti solely deals with forensic law, both substantive and procedural, without any reference to penance and other religious matters. Thus it makes a departure from the earlier works and can be regarded as purely relating to law. It deals with courts and judicial procedure and also lays down the law regulating the eighteen titles with great clarity. Narada was independent in his views and did not allow himself to be bound by the earlier texts. This Smriti is remarkable for its progressive views on various matters. The procedural law laid down by this Smriti contains provisions relating to pleading, evidence (oral and documentary) as also the procedure required to be adopted by the courts of law, the details of which are dealt with in the relevant chapters.

Narada Smriti contains three introductory chapters on the principles of judicial procedure and on judicial assembly. Then it deals with titles of law as in Manu and Yajnavalkya. In an Appendix it deals with the offence of theft. It contains 1028 verses including 61 in the Appendix. This Smriti was translated by Dr. Jolly in 1876.

About 700 verses from Narada are profusely quoted in various Nibandhas (commentaries and digests) written by famous writers like Vishwarupa, Medhatithi and Jeemutavahana. Bana, in his Kadambari, refers to a distinct work of Narada on politics. The same has so far not been traced. In the India Office Library there is a manuscript of Narada Smriti in 3 chapters, 322 verses, dealing exclusively with achara and prayaschitta. Jolly is of the opinion that the date of Narada Smriti is later than 300 A.D. As the oldest manuscript was recovered from Nepal and the oldest commentary was also written in Nepal, Dr. Jolly opines that Narada hailed from Nepal. Very important changes in law are discernible from Narada Smriti and therefore it forms an important landmark in the evolution of ancient Indian legal system and also throws a great light on the political and social institutions during the period when it was written.

This Smriti indicates that ancient Indian jurists never hesitated to take a progressive view and did not feel themselves bound by the opinion

expressed by earlier jurists. Later jurists gave expression to their thoughts freely and they proceeded on the basis that law cannot be static, but it must change according to the changing social and political conditions."

Question No. 2: **(10 Marks)**

Translate the following passage inEnglish.

नीचे दिये गये लेखांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजियेः–

"मेरा यकीन मानो, अगर तुम्हें भी पूरे डेढ़ बरस तक इसी तरह बंद रहना पड़ता तो कई बार तुम्हें भी चीजें हद से परे नजर आती । लेकिन भावनाओं की अनदेखी नहीं की जा सकती । भले ही वे कितनी भी गलत या कृतघ्न नजर आयें । मैं साईकिल चलाने, नाचने, सीटी बजाने, दुनिया को देखने, खुद को जवान महसूस करने के लिए तपड़ती हूं, कसमसाती हूं । मैं महसूस करना चाहती हूं कि मैं आजाद हूं लेकिन मैं ये सब दिखा नहीं सकती। जरा कल्पना करो कि हम आठों के आठों अपने आप के लिए अफसोस मनाते घूमते रहें और हमारे चेहरों पर असंतोष साफ–साफ लिखा हुआ नजर आए । क्या होगा तब ? ये स्थिति हमें किस ओर ले जाएगी ? मैं कई बार हैरान होती हूं कि क्या कभी कोई इस बात को समझ पाएगा कि मैं क्या कहना चाहती हूं। क्या कभी कोई मेरी सारी कृतघ्नताओं की अनदेखी करके और इस बात की परवाह न करके कि मैं यहूदी हूं या नहीं, सिर्फ यह देखेगा कि मैं एक किशोरी हूं जिसे सिर्फ....सिर्फ कुछ मजे लेने, खेल–कूद लेने की उत्कट चाह है। मुझे नहीं पता और मैं कभी किसी से इस बारे में कह भी नहीं पाऊंगी । इसकी वजह यह है कि मेरी रूलाई फूट पड़ेगी । रोने से मन हल्का हो जाता है, लेकिन ये रोना अकेले में नहीं होना चाहिए। मेरी सारी कोशिशों और मान्यताओं के बावजूद में दिन–रात चौबीसों घंटे एक ऐसी मां के लिए तड़पती हूं जो मुझे समझ सके। इसलिए मैं लिखने और कहने के साथ जो कुछ भी करती हूं, मैं हमेशा एक ऐसी मां की कल्पना करती हूं जो बाद में मैं अपने बच्चे पालते समय होना चाहूंगी। एक ऐसी मां जो लोगों की कही हर बात को बहुत गंभीरता से न लेती हो लेकिन मुझे, अपनी बेटी को गंभीरता से लेती हो, मैं क्या बताना चाह रही हूं, यह कह पाना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल है, लेकिन 'मां' शब्द अपने आप सब कुछ बयान कर देता है। तुम जानती हो, मैंने क्या तरीका अपनाया है ? मैं 'मां' शब्द की गरिमा को महसूस कर सकूं इसलिए हमेशा मम्मी को 'मां' या इससे मिलते–जुलते शब्दों से पुकारती रहती हूं। कभी उनका नाम बिगाड़ भी देती हूं । काश! मैं उनका सही तरीके से आदर कर पाती। मैं जो भी नाटक करती रहती हूं, उनके साथ, वे समझ नहीं पातीं, नहीं तो उनकी नाराजगी ही बढ़ेगी ।

चलो, ये मसला काफी हो गया। मेरे लेखन ने कुछ हद तक तो मुझे 'निराशा की गहराईयों' से उबारा ही है।"